

शुगर पर टैक्स के लिए तैयार नहीं इंडियन इंडस्ट्री

G-20 समिट में इंटरनेशनल डायबिटीज फेडरेशन ने ग्लोबल नेताओं से स्वीट बेवरेजेज, शुगर पर टैक्स लगाने की मांग की

[जयश्री भोसले | पुणे]

शुगर यानी चीनी भारत में मस्ती और त्योहारों का अटूट हिस्सा है। हालांकि, अब इसे खतरनाक मानकर लोगों को इसकी आदत से छुटकारा दिलाने के लिए इस पर टैक्स लगाने की आवाज उठने लगी है, लेकिन भारतीय शुगर कारोबारी इस प्रस्ताव के खिलाफ हैं। उनका कहना है कि मीठे को बेवजह खराब बताया जा रहा है।

शुगर पर हालिया हमला तुर्की में हुए जी-20 देशों के शिखर सम्मेलन में हुआ। इस सम्मेलन में इंटरनेशनल डायबिटीज फेडरेशन ने ग्लोबल नेताओं से स्वीट बेवरेजेज और शुगर पर टैक्स लगाने की मांग की। इन नेताओं से वित्तीय और भू-राजनीतिक समस्याओं की तरह ही डायबिटीज और मोटापे जैसी महामारी भी लड़ने की मांग की गई।

दो साल एम्सटर्डम हेल्थ सर्विस के हेड ने कहा था कि शुगर प्रॉडक्ट्स में तंबाकू की तरह स्वास्थ्य संबंधी चेतावनी होनी चाहिए, क्योंकि शुगर इस वक्त का 'सबसे खतरनाक ड्रग' है। यह संदेश भारत भी पहुंचा, जिसे अक्सर दुनिया का डायबिटीज कैपिटल कहा जाता है। इस साल कम्युनिटी मेडिसिन के भारतीय जर्नल में कहा गया है कि नमक, शुगर और फैट की खपत को रोकने के लिए सार्वजनिक स्तर पर कोशिश करने की जरूरत है। साथ ही, स्वीट बेवरेजेज, नमकीन स्नैक्स या हाई फैट कंटेन्ट वाले प्रोसेस्ड फूड्स पर एडिशनल टैक्स के असर के बारे में भी स्टडी की दरकार है। इसके मुताबिक, 'कई देशों के अनुभव बताते हैं कि इन चीजों पर एडिशनल 'एक्साइज टैक्स' से लोगों के स्वास्थ्य पर पॉजिटिव असर होता है। गैर-स्वास्थ्यवर्धक आइटम्स मसलन ज्यादा सॉल्ट या शुगर वाले प्रॉडक्ट्स पर एडिशनल टैक्स लगाकर इससे हासिल होने वाले अतिरिक्त रेवेन्यू का इस्तेमाल हेल्थ से जुड़े बेहतर कार्यक्रमों में किया जा सकता है।' फ्रांस, चिली और मेक्सिको जैसे देश इस तरह के टैक्स को लेकर प्रयोग कर चुके हैं।

हालांकि, इंडस्ट्री और कारोबारियों की इस पर अलग राय है। श्री रेणुका शुगर्स के नरेंद्र मुरकुंबी ने बताया, 'मैं भारतीय शुगर इंडस्ट्री को लेकर निराशावादी नहीं हूँ। पश्चिम देशों में शुगर की खपत कम होने के बावजूद मोटापे और हेल्थ संबंधी अन्य समस्याएं वहां बढ़ी हैं। इन देशों के लोगों ने महसूस किया है कि सिर्फ शुगर नहीं बल्कि सही खानपान, लाइफस्टाइल और एक्सरसाइज बेहतर स्वास्थ्य के लिए जरूरी है।' उनका यह भी



कहना था कि विकासशील देशों को अपना एनर्जी कंजम्पशन बढ़ाना होगा। भारत के लिए शुगर दुनिया के कई हिस्सों के मुकाबले ज्यादा बड़ा खतरा है। इंटरनेशनल डायबिटीज फेडरेशन के मुताबिक, 'भारत में डायबिटीज की बीमारी काफी तेजी से बढ़ रही है। यहां इस बीमारी के शिकार लोगों की संख्या 6.51 करोड़ हो गई, जबकि 2010 में यह आंकड़ा 5.08 करोड़ था।'

हालांकि, इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन के डायरेक्टर जनरल अबिनाश वर्मा भी यह नहीं मानते कि शुगर टैक्स से चीजें ठीक होंगी। उन्होंने बताया, 'मैं शुगर टैक्स लगाने पर ही सवाल उठाना चाहता हूँ। शुगर नहीं, बल्कि फैट या एक्सरसाइज नहीं करना मोटापे के लिए जिम्मेदार हैं। कई देशों ने शुगर टैक्स लगाने की कोशिश की, लेकिन इसमें कामयाबी नहीं मिली। शुगर की तरफ नमक पर भी टैक्स लगाने की मांग हो सकती है।'